Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंधों की समीक्षा: एक अध्ययन

डॉ. मधु सूदन प्रधान	सह-आचार्य, ईएएफएम, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरू, राजस्थान.
डॉ. लाल चन्द चाहर	सहायक आचार्य, ईएएफएम, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चुरू, राजस्थान.

ABSTRACT:

वर्चुअल प्रारूप में भारत ने जनवरी 2023 में वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ कंट्रीज समिट की पहली मेजबानी की और द्वितीय संस्करण नवंबर 2023 में आयोजित किया। वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट भारत के वसुधैव कुटुम्बकम कि कल्याणकारी भावना या "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" के दर्शन का अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में फैलाव है। तीसरे VOGSS की मुख्य विशेषताएं भागीदारी: 123 देश (चीन और पाकिस्तान को आमंत्रित नहीं किया गया) मूलभावना : ग्लोबल साउथ देशों का सतत आर्थिक विकास करना। भारत ने विकासशील देशों के बढ़ते कर्ज को ध्यान में रकहते हुवे एक व्यापक और मानव-केंद्रित "वैश्विक विकास समझौता" प्रस्तावित करने कि भावना जताई है। जिसमे भारत वैश्विक दक्षिण देशों के साथ मिलकर सस्ती जेनेरिक दवाइयाँ उपलब्ध कराने, प्राकृतिक खेती क्षेत्र में विशेष अनुभव साझा करने के लिए काम करेगा। भारत व्यापार वर्धन हेतु संचालित गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए $2.5 मिलियन धन राशि का एक विशेष कोष भी शुरू करेगा, और व्यापार नीति और व्यापार बातचीत में क्षमता निर्माण के लिए $1 मिलियन धन राशि का कोष भी शुरू करेगा।

KEYWORDS:

भारत, वैश्विक दक्षिण, VOGSS, आर्थिक चुनौतियाँ, आर्थिक नीतियाँ।

परिचय (INTRODUCTION)

वैश्विक दक्षिण देशो में वे देश है जो कि यह तकनीकी और सामाजिक रूप से कम विकसित देश है जो दक्षिणी गोलार्ध में स्थित हैं, जिनमे मुख्यतया से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका।

एक रिपोर्ट के अनुसार तकनीकी उन्नति, जीडीपी शिक्षा रोजगार आदि जैसे विभिन्न मापदंडों व मानको के आधार पर उत्तर और दक्षिण देशों के बीच विभाजन का प्रस्ताव रखा गया है।

ग्लोबल साउथ कि प्रमुख समस्याएँ **[1,2,3]**

1. वैश्विक मंच पर कम प्रतिनिधित्व: उदाहरण के लिए पहला संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से अफ्रीकी और लैटिन अमेरिका को बाहर रखा जाना। दूसरा

2. उच्च सार्वजनिक ऋण: उदाहरण के लिए UNCTAD की 2024 कि प्रकाशित रिपोर्ट 'ए वर्ल्ड ऑफ डेट रिपोर्ट 2024' के में बताया गया कि विकासशील देशों में सार्वजनिक ऋण विकसित देशों की तुलना में दोगुनी गति से बढ़ रहा है।

3. वर्तमान परिपेक्ष्य में अप्रचलित वैश्विक प्रशासन और वित्तीय संस्थान: उदाहरण के लिए WTO की शिथिल अपीलीय विवाद निपटारा व्यवस्था, विश्व बैंक और IMF जैसी वैश्विक संस्थाओं में कम के कम प्रतिनिधित्व। जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुपातहीन असंवेदनशीलता। उदाहरण के लिए 2023 WMO कि प्रकाशित रिपोर्ट 'स्टेट ऑफ द क्लाइमेट इन द साउथ-वेस्ट पैसिफिक 2023 रिपोर्ट' के अनुसार, वैश्विक उत्सर्जन व पर्यावरण क्षति में में निवल 0.02% हिस्सेदारी के बाद भी बढ़ते समुद्र जल स्तर के कारण प्रशांत सागरीय द्वीपय समूह वाले देश अधिक जोखिम में हैं।

4. वैश्विक उत्तर से विचलन: उधाहरनार्थ लोकतंत्र, जनहितकारी मानवाधिकारों जलवायु और पर्यावरण जैसे एजेंडे की व्याख्या पर आम सहमति का अभाव होना। इसके अतिरिक्त, वैश्विक उत्तर के भू-राजनीतिक संघर्ष व युद्ध वैश्विक दक्षिण को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए रूस-यूक्रेन युद्ध ने खाद्य और तेल की कीमतों में मुद्रास्फीति व संकटो को बढ़ावा दिया है।

5. भारत के लिए वैश्विक दक्षिण का महत्व तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव: ग्लोबल साउथ देशों का भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और इसके आर्थिक परिवर्तन और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण और विशेष समर्थन है।

6. रणनीतिक विचार: ग्लोबल साउथ के साथ संबंध भारत की "बहु-दिशात्मक संरेखण" रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह चीन के प्रभाव को भी कम करने में भी मदद करता है।

7. आर्थिक विकास: वैश्विक दक्षिण प्रचुर संसाधन प्रदान कर सकता है और भारतीय उत्पादों व सामन के निर्यात के लिए एक विशाल बाजार उपलब्ध करवा सकता है।

भारत खुद को ग्लोबल साउथ की आवाज़ के रूप में कैसे स्थापित निरंतर रूप से कर रहा है?

1. भारत कनेक्टिविटी और आर्थिक अंतर-संबंधों को बढ़ाना: स्वास्थ्य, आवास, पर्यावरण और शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचे के विकास से लेकर समुदाय से संबंधित परियोजनाओं तक की परियोजनाओं के मध्यम से आर्थिक चुनौतियों को कम करने और आर्थिक संकटों को दूर करने में उनकी सहायता करने के लिए विशेष भागीदार देशों को वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता तीनो स्तर पर सहयोग प्रदान करना। क्षमता निर्माण और वैश्विक दक्षिण के प्रथम प्रत्युत्तरकर्ता के रूप में उभरना। उदाहरणार्थ भारत-संयुक्त राष्ट्र क्षमता निर्माण पहल, कोविड-19 के दौरान वैक्सीन मैत्री पहल।

2. वैश्विक जलवायु एजेंडा का नेतृत्व करना: उदाहरणार्थ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) और आपदा प्रतिरोधक गठबंधन (सीडीआरआई) का समर्थन करना, साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्वों (सीबीडीआर) का समर्थन करना।

3. वैश्विक दक्षिण के लिए प्रासंगिक मुद्दों की वकालत करना: उदाहरणार्थ अफ्रीकी संघ को जी-20 में शामिल करना।

4. बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार करना: उदाहरणार्थ यूएनएससी की स्थायी सदस्यता को व्यापक बनाने की मांग।

5. लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर वैकल्पिक तंत्र: उदाहरणार्थ पंचशील, गुजराल सिद्धांत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांत पर आधारित।

वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने में भारत के लिए चुनौतियाँ

1. विविध हित: वैश्विक दक्षिण एक विविध क्षेत्र है, जिसके आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक हित अलग-अलग हैं, जिसके कारण एकीकृत रुख अपनाना मुश्किल है।

2.चीन के साथ प्रतिस्पर्धा: विकास वित्त, बुनियादी ढांचे, व्यापार, परियोजनाओं की डिलीवरी आदि में चीन की प्रतिस्पर्धा और हस्तक्षेप। उदाहरण के लिए बीआरआई, चेक बुक कूटनीति।

3. कूटनीतिक चुनौती: वैश्विक दक्षिण का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करते हुए अमेरिका,

रूस जैसी शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी को संतुलित करना कूटनीतिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके अलावा, यह इसकी विश्वसनीयता को कम कर सकता है क्योंकि इसे पारंपरिक गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) सिद्धांतों से दूर झुकाव के रूप में देखा जा सकता है।

4.सीमित व्यापक राष्ट्रीय शक्ति: भारत की सीमित राष्ट्रीय शक्ति और खराब विनिर्माण उद्योग, साथ ही कम विज्ञान और प्रौद्योगिकी नवाचार और श्रम गुणवत्ता, वैश्विक दक्षिण की जटिलताओं को संबोधित करने में चुनौतियां पेश करते हैं।

5. ऊर्जा संक्रमण के साथ समस्या: भारत को जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता और अपनी जलवायु प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में चुनौतियों के लिए आलोचना का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए पश्चिमी देशों ने COP 26 में कोयले को "चरणबद्ध तरीके से समाप्त" करने की प्रतिबद्धता का विरोध करने के बाद भारत की आलोचना की।

वैश्विक दक्षिण के लिए वकालत दिखाने वाली भारत की पहल

1. सामाजिक प्रभाव निधि: भारत वैश्विक दक्षिण में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) को गति देने के लिए $25 मिलियन का योगदान देगा। [4,5,6]

2. वैश्विक दक्षिण युवा राजनयिक मंच: शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया।

3. अफ्रीकी संघ को G20 में शामिल करना: भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान एक स्थायी सदस्य के रूप में।

4. आरोग्य मैत्री का विजन: एक विश्व-एक स्वास्थ्य स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए भारत का मिशन है। उदाहरण के लिए हाल ही में, मॉरीशस में भारत का पहला विदेशी जन औषधि केंद्र खोला गया।

चूंकि भारत एक संतुलनकारी देश से अग्रणी शक्ति के रूप में परिवर्तित हो रहा है, इसलिए उसे वैश्विक दक्षिण देशों को एकजुट करने के लिए "वसुधैव कुटुम्बकम" जैसे अपने समृद्ध सांस्कृतिक लोकाचार का लाभ उठाना चाहिए। डिजिटल विभाजन को पाटने, आपदा-रोधी बुनियादी ढांचे का समर्थन करने और एक समावेशी, न्यायसंगत अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की वकालत करके, भारत वैश्विक मंचों पर उनकी सामूहिक आवाज़ को बढ़ा सकता है। चर्चा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन (VoGSS) के उद्घाटन के अवसर पर एक नए वैचारिक ढांचे के साथ दक्षिण-दक्षिण जुड़ाव की शर्तों को फिर से संतुलित करने का प्रयास किया, जिसे उन्होंने "विकास समझौता" के रूप में वर्णित किया। अवधारणा के पीछे का विचार सामंजस्यपूर्ण तरीके से जुड़ाव के पांच अलग-अलग तौर-तरीकों का लाभ उठाना है, जहां एक दूसरे को मजबूत करता है। ये हैं क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी साझाकरण, विकास के लिए व्यापार, अनुदान और सबसे महत्वपूर्ण, रियायती वित्त। यदि इसे अच्छी तरह से लागू किया जाए, तो भारत का विकास समझौता वैश्विक दक्षिण के साथ व्यापक जुड़ाव के लिए एक नई आधार रेखा स्थापित करेगा। जुड़ाव के तौर-तरीकों में असंतुलन के कारण, वैश्विक दक्षिण का एक बड़ा हिस्सा चिंताजनक अनुपात के ऋणग्रस्तता में फंस गया है। UNCTAD (2023) के आंकड़े सब कुछ बयां करते हैं: 2023 में विकासशील देशों का सार्वजनिक ऋण $29 ट्रिलियन था; विकासशील देशों का सार्वजनिक ऋण पर शुद्ध ब्याज भुगतान $847 बिलियन था; 54 विकासशील देश अपने राजस्व का 10 प्रतिशत से अधिक शुद्ध ब्याज भुगतान पर खर्च करते हैं; और विकासशील देशों ने 2022 में नकारात्मक शुद्ध संसाधन हस्तांतरण का अनुभव किया। यहां, यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि OECD देशों द्वारा 1970 के अपने वैश्विक रूप से सहमत संयुक्त राष्ट्र लक्ष्य को पूरा करने में निरंतर विफलता के कारण ऋण संकट और भी बढ़ गया है, जिसमें GNP का 0.7 प्रतिशत ODA (आधिकारिक विकास सहायता) के रूप में प्रदान करना शामिल है; साथ ही जलवायु परिवर्तन पर $100 बिलियन की प्रतिबद्धता भी शामिल है। ग्लोबल साउथ के लिए बुनियादी बातों पर वापस जाना और विकास के विचार पर फिर से विचार करना बेहद ज़रूरी है जो वैश्विक नीति परिदृश्य से गायब हो गया है। रीगनवाद के नेतृत्व में और थैचरवाद के वित्त संचालित वैश्वीकरण और GATT से WTO के विनियमन के दृष्टिकोण ने विकासशील देशों के लिए नीतिगत स्थान को पूरी तरह से निचोड़ दिया। इसने, एक तरह से, राउल प्रीबिश और अन्य लोगों द्वारा केंद्र-परिधीय सिद्धांत के रूप में सामने रखी गई आशंकाओं को पुष्ट किया। वाशिंगटन सर्वसम्मति के पतन के बाद से, VOGSS ने आर्थिक विकास, सामाजिक समावेश और पर्यावरणीय पोषण के लिए वैकल्पिक मार्गों की खोज के लिए अपने नए अवतार में विकास पर चर्चा करने की नई उम्मीद दी है।[7,8,9]

इस संबंध में, विकास के अनुभवों और नीति निर्माण पर अंतर्दृष्टि का आपसी आदान-प्रदान नए विकल्पों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस वर्ष की थीम "स्थायी भविष्य के लिए वैश्विक दक्षिण को सशक्त बनाना" के साथ, शिखर सम्मेलन ने वैकल्पिक विकास प्रतिमान विकसित करने के लिए एक-दूसरे के अनुभवों, अंतर्दृष्टि और संभावनाओं को साझा करने पर ध्यान केंद्रित किया है। विचार यह है कि दक्षिणी अनुभवों और दृष्टिकोणों के आधार पर यह विकास कथा दक्षिणी आशाओं और आकांक्षाओं को संबोधित करती है। भारत में हाल की विकास पहलों से पाँच व्यापक संभावनाएँ हैं जिन्हें वैश्विक दक्षिण में स्थानीय रूप से प्रासंगिक पारिस्थितिकी प्रणालियों के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। पहला स्थिरता के क्षेत्र में है, जिसमें पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE), SDG को फिर से सक्रिय करना और छत पर सौर पैनलों और सौर खेतों के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना पर जोर दिया गया है। दूसरा स्वास्थ्य सुरक्षा को बढ़ावा देने का क्षेत्र है जहाँ भारत के लिए प्रेरक शक्ति "एक विश्व एक स्वास्थ्य" की अवधारणा के आसपास है। यहाँ, आरोग्य मैत्री के लिए भारत के योगदान को याद किया जा सकता है। भारत ने अफ्रीका और प्रशांत द्वीप देशों को अस्पताल और जन औषधि केंद्र बनाकर जो सहायता प्रदान की है, वह महत्वपूर्ण है। तीसरा, मानवीय संकटों में भारत का प्रथम प्रत्युत्तरदाता के रूप में उभरना, चाहे वह पापुआ न्यू गिनी, केन्या, गाजा और यूक्रेन में हो। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारत अन्य देशों को आपदा प्रतिरोधक क्षमता लाने और त्वरित, प्रभावी और कुशल प्रतिक्रियाओं के लिए आवश्यक संस्थागत तंत्र लाने के लिए तैयार करने के लिए क्या प्रयास कर रहा है। चौथा, यूपीआई और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से वित्तीय समावेशन और अंतिम मील कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने से संबंधित है। भारत ने पहले ही डीपीआई को बढ़ावा देने के लिए 12 देशों के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। पांचवां, शिक्षा, कौशल और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में अंतर्संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता है। भारत के विकास के अनुभव को साझा करने के लिए, संस्थागत ढांचे विभिन्न संस्थाओं और लोगों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। वीओजीएसएस में, प्रधानमंत्री ने भारत द्वारा ज्ञान संवर्धन, अनुभव साझा करने और कौशल एवं क्षमता निर्माण के लिए विकसित कार्यक्रमों के लिए दक्षिण नामक ग्लोबल साउथ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की शुरुआत को याद किया। ऐसे संस्थानों की भूमिका ज्ञान और अनुभवों के दोतरफा प्रवाह को बढ़ावा देना है। बहुलवादी दृष्टिकोण पहुंच, समानता और समावेश सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट चुनौतियों पर काबू पाने के लिए रणनीतियों को लाकर विकास के ग्लोबल साउथ विजन को समृद्ध करेगा। ये संस्थान ज्ञान के सह-निर्माण की सुविधा प्रदान कर सकते हैं। 6 विकास समझौते के अलावा, कुछ अन्य घोषणाएं भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य उन अंतरालों को पाटना है जहां वे स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। नीति प्रभाव विश्लेषण और व्यापार प्रदर्शन ग्लोबल साउथ की विकास यात्रा में कमजोर कड़ी रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, क्षमता निर्माण के लिए 2.5 मिलियन डॉलर और व्यापार नीति निर्माण में प्रशिक्षण के लिए 1 मिलियन डॉलर के साथ एक विशेष कोष की घोषणा की गई है। भारत ने 25 मिलियन डॉलर के शुरुआती योगदान के साथ एक सामाजिक प्रभाव कोष की स्थापना की भी घोषणा की है। आरआईएस अध्ययन के अनुसार, भारत वर्तमान में वैश्विक दक्षिण के विभिन्न भागीदार देशों को सालाना लगभग 7.5 बिलियन डॉलर प्रदान करता है।[10,11,12] प्रधानमंत्री मोदी द्वारा वैश्विक दक्षिण को अपनी साझा चिंताओं को व्यक्त करने के लिए एक साथ आने और वैश्विक समाधानों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण लाने पर जोर देना एक महत्वपूर्ण आह्वान है जिसे वैश्विक दक्षिण समुदाय द्वारा गंभीरता से सुना जाना चाहिए। इनमें से कुछ मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में VOGSS एक महत्वपूर्ण पहल है, ऐसी दुनिया में जहां लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों के लिए अनिश्चितता और भेद्यता कई गुना बढ़ गई है। आतंकवाद के माध्यम से अस्थिर करने की साजिशों और अलगाववादी ताकतों और सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा देने के साधनों की सक्रिय भागीदारी पर जोर, बांग्लादेश में हाल की घटनाओं को देखते हुए बहुत महत्व रखता है, जिसकी अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस भी सत्र में भाग ले रहे थे।

परिणाम **(RESULTS)**

21वीं सदी विकासशील दुनिया के लिए अभूतपूर्व चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत करती है, जिसे अक्सर ग्लोबल साउथ के नाम से जाना जाता है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका को शामिल करने वाले देशों का यह विविध समूह गरीबी, असमानता, जलवायु

परिवर्तन और संसाधनों तक असमान पहुँच जैसे मुद्दों का सामना करता है। हालाँकि, ग्लोबल साउथ में एक बढ़ती हुई युवा आबादी, समृद्ध प्राकृतिक संसाधन और बढ़ती हुई आर्थिक छाप भी है। इस संदर्भ में, ग्लोबल साउथ के लिए एक संभावित "आवाज़" के रूप में भारत का उभरना अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था के लिए एक सम्मोहक आख्यान प्रस्तुत करता है। भारत का उदय और ग्लोबल साउथ हाल के दशकों में भारत की आर्थिक वृद्धि की कहानी उल्लेखनीय रही है। यह अब नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद के हिसाब से दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और इसमें तेज़ी से विस्तार करने वाला मध्यम वर्ग है। यह आर्थिक वृद्धि, एक विकासशील राष्ट्र के रूप में अपने ऐतिहासिक अनुभव के साथ मिलकर, भारत को ग्लोबल साउथ की चिंताओं का सामना करने के लिए अद्वितीय रूप से स्थान देती है।

भारत की आवाज़ क्यों मायने रखती है:

1. साझा विकास चुनौतियाँ: भारत वैश्विक दक्षिण में अन्य देशों के विकास संघर्षों को समझता है, जिसने अपने विकास पथ में समान चुनौतियों का सामना किया है। यह साझा अनुभव गरीबी, भूख और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए सहानुभूति और सहयोगात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

2. आर्थिक महाशक्ति: भारत की आर्थिक वृद्धि और एक प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र के रूप में उभरना इसे वैश्विक मंच पर एक मजबूत आवाज़ देता है। यह भारत को निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं की वकालत करने, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंचों पर विकासशील देशों की चिंताओं को संबोधित करने और दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने की अनुमति देता है, जहाँ विकासशील देश आपसी लाभ के लिए सहयोग करते हैं।

3. लोकतांत्रिक साख: भारत का जीवंत लोकतंत्र और गुटनिरपेक्षता का लंबा इतिहास इसे अक्सर ध्रुवीकृत विश्व व्यवस्था में एक तटस्थ आवाज़ के रूप में स्थापित करता है। यह भारत को महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर विभाजन को पाटने और आम सहमति बनाने की अनुमति देता है।

ग्लोबल साउथ पहल की "आवाज़"

ग्लोबल साउथ की चिंताओं को बढ़ाने में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका का उदाहरण 2023 में पहले और दूसरे "ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन" की मेज़बानी से मिलता है। इस पहल ने विकासशील देशों के नेताओं को कई मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक साथ लाया, जिनमें शामिल हैं:

1. सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी): शिखर सम्मेलनों ने गरीबी उन्मूलन, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए वैश्विक दक्षिण के लिए एक महत्वपूर्ण एजेंडा, संयुक्त राष्ट्र के एसडीजी को प्राप्त करने पर सहयोग को बढ़ावा दिया।

2. जलवायु परिवर्तन: शिखर सम्मेलनों ने विकासशील देशों पर जलवायु परिवर्तन के असंगत प्रभाव को संबोधित किया और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और जलवायु वित्त तक समान पहुँच की वकालत की। वैश्विक शासन सुधार: शिखर सम्मेलनों ने वैश्विक दक्षिण के लिए बेहतर प्रतिनिधित्व और निर्णय लेने की शक्ति सुनिश्चित करने के लिए विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में सुधारों का आह्वान किया।

3.दक्षिण-दक्षिण सहयोग: शिखर सम्मेलन ने बुनियादी ढांचे के विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और ज्ञान साझाकरण जैसे क्षेत्रों में विकासशील देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया।[13,14,15]

चुनौतियाँ और अवसर

अपनी क्षमता के बावजूद, वैश्विक दक्षिण की "आवाज़" के रूप में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करती है:

1. आंतरिक विकास के मुद्दे: भारत स्वयं गरीबी, असमानता और बुनियादी ढाँचे की कमियों से जूझ रहा है। इन घरेलू चुनौतियों का समाधान करने से वैश्विक मंच पर भारत की विश्वसनीयता और नेतृत्व मजबूत होगा।

2. वैश्विक दक्षिण की विविधता: वैश्विक दक्षिण एक अखंड इकाई नहीं है। सदस्य देशों के बीच महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक मतभेद हैं। आम सहमति बनाना और इन विविध हितों को संबोधित करना "आवाज़" पहल की सफलता के लिए महत्वपूर्ण होगा।

3. भू-राजनीतिक वास्तविकताएँ: वर्तमान भू-राजनीतिक परिदृश्य, प्रतिस्पर्धी शक्ति ब्लॉकों के साथ, वैश्विक दक्षिण के लिए एकीकृत आवाज़ पेश करना मुश्किल बना सकता है। भारत को इन जटिलताओं को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने की आवश्यकता है।

आगे की राह

चुनौतियों के बावजूद, वैश्विक दक्षिण का नेतृत्व करने की भारत की क्षमता महत्वपूर्ण बनी हुई है। यहाँ बताया गया है कि भारत एक अग्रणी आवाज़ के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए क्या कर सकता है:

1. घरेलू विकास पर ध्यान दें: गरीबी और बुनियादी ढांचे की बाधाओं जैसी आंतरिक चुनौतियों का समाधान करने से भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति मजबूत होगी।

2. दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा दें: भारत अन्य विकासशील देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अपनी आर्थिक और तकनीकी क्षमता का लाभ उठा सकता है। इसमें सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और संयुक्त बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शामिल हो सकती हैं।

3. विभाजन को पाटना: भारत वैश्विक दक्षिण और विकसित देशों के बीच एक पुल के रूप में कार्य कर सकता है, संवाद को बढ़ावा दे सकता है और एक नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा दे सकता है जिससे सभी को लाभ हो।

4. सॉफ्ट पावर में निवेश करें: भारत की विकास कहानी और वैश्विक दक्षिण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के इर्द-गिर्द एक मजबूत आख्यान का निर्माण अंतरराष्ट्रीय समर्थन हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

वैश्विक दक्षिण की "आवाज़" के रूप में भारत का उदय एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण विश्व व्यवस्था बनाने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है। अपनी चुनौतियों का समाधान करके, दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देकर और विकासशील देशों के हितों की वकालत करके, भारत एक ऐसे भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जिससे सभी को लाभ हो। "आवाज़" की सफलता के लिए सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है जबकि भारत का नेतृत्व महत्वपूर्ण है, "आवाज़" की वैश्विक दक्षिण पहल की सफलता सामूहिक कार्रवाई पर निर्भर करती है। यहाँ बताया गया है कि अन्य विकासशील देश क्या कर सकते हैं:

1. विविधता में एकता: मतभेदों के बावजूद, विकासशील देशों को महत्वपूर्ण मुद्दों पर साझा आधार खोजने और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एकजुट मोर्चा पेश करने की आवश्यकता है।

2. सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करना: विकासशील देश शासन, गरीबी उन्मूलन और आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करके एक-दूसरे की सफलताओं और चुनौतियों से सीख सकते हैं।

3. क्षेत्रीय भागीदारी का निर्माण: अफ्रीकी संघ या दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान) जैसे वैश्विक दक्षिण के भीतर मजबूत क्षेत्रीय ब्लॉक, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी सामूहिक आवाज़ को बढ़ा सकते हैं।

एक नई विश्व व्यवस्था के लिए एक नया आख्यान

"आवाज़" की वैश्विक दक्षिण पहल सहयोग, समावेशिता और साझा समृद्धि पर आधारित एक नई विश्व व्यवस्था के लिए एक आकर्षक आख्यान प्रस्तुत करती है। यहाँ कुछ संभावित लाभ दिए गए हैं:

1. एक अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यापार प्रणाली: विकासशील देश निष्पक्ष व्यापार नियमों और वैश्विक बाजारों तक पहुँच बढ़ाने की वकालत कर सकते हैं, जिससे आर्थिक विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा मिलेगा। सभी के लिए

2. सतत विकास: जलवायु परिवर्तन और संसाधन प्रबंधन जैसे मुद्दों पर सहयोग सभी देशों के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकता है।

3. एक मजबूत बहुपक्षीय प्रणाली: वैश्विक दक्षिण के लिए एक अधिक मजबूत आवाज अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में सुधार ला सकती है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वे सभी सदस्य राज्यों की जरूरतों के प्रति अधिक प्रतिनिधि और उत्तरदायी हों।

केस स्टडीज़: विकास चुनौतियों के लिए भारत के समाधान

भारत की विकास यात्रा अन्य विकासशील देशों के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करती है जो समान चुनौतियों से निपट रहे हैं। यहाँ 10 केस स्टडीज़ दी गई हैं जो बताती हैं कि भारत ने किस तरह से विशिष्ट बाधाओं का समाधान किया है:

1. हरित क्रांति (1960-70 का दशक): इस पहल का उद्देश्य उच्च उपज वाली फसल किस्मों, बेहतर सिंचाई विधियों और उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि करना था। इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा और गरीबी में कमी आई।

सीखे गए सबक: कृषि अनुसंधान में निवेश, बुनियादी ढाँचे (सिंचाई) में सुधार और इनपुट (बीज, उर्वरक) तक पहुँच प्रदान करना कृषि उत्पादकता को बढ़ा सकता है।

2. श्वेत क्रांति (1970 के दशक से आगे): इस कार्यक्रम ने सहकारी समितियों और डेयरी बुनियादी ढाँचे के विकास के माध्यम से दूध उत्पादन को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। इसने ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया, रोजगार सृजित किए और पोषण संबंधी परिणामों में सुधार किया।

सीखे गए सबक: सहकारी समितियाँ स्थानीय समुदायों को सशक्त बना सकती हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकती हैं। बुनियादी ढांचे में निवेश संसाधन प्रबंधन और प्रसंस्करण में सहायता करता है। [16,17,18]

3. माइक्रोफाइनेंस आंदोलन (1990 के दशक से आगे): यह पहल कम आय वाले उद्यमियों, विशेष रूप से महिलाओं को छोटे ऋण और वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती है। यह व्यक्तियों को सशक्त बनाता है, स्वरोजगार को बढ़ावा देता है और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देता है।

सीखे गए सबक: माइक्रोफाइनेंस व्यक्तियों को माइक्रोबिजनेस शुरू करने और अपने वित्त का प्रबंधन करने में सक्षम बनाकर गरीबी को कम कर सकता है।

4. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) (2005): यह कार्यक्रम ग्रामीण परिवारों के लिए मैनुअल अकुशल कार्य में 100 दिनों के वेतन रोजगार की गारंटी देता है। यह सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है, ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देता है, और सूखे या कृषि के मौसम के दौरान गरीबी को कम करता है।

सीखे गए सबक: सामाजिक सुरक्षा जाल कार्यक्रम न्यूनतम आय की गारंटी देकर और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के माध्यम से ग्रामीण विकास को बढ़ावा देकर गरीबी को कम कर सकते हैं।

5. आधार परियोजना (2010 से आगे): यह पहल सभी भारतीय निवासियों को एक विशिष्ट पहचान संख्या प्रदान करती है। यह सरकारी सेवा वितरण में पारदर्शिता को बेहतर बनाता है, भ्रष्टाचार को कम करता है, तथा बैंक खातों और सब्सिडी को जोड़कर वित्तीय समावेशन को सुगम बनाता है।

सीखे गए सबक: डिजिटल पहचान प्रणाली को लागू करने से सेवा वितरण में सुधार हो सकता है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है, तथा वित्तीय लेनदेन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है।

6. स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) (2014- आगे): इस राष्ट्रव्यापी अभियान का उद्देश्य पूरे भारत में स्वच्छता और सफाई में सुधार करना है। यह शौचालयों के निर्माण, व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने, तथा ठोस अपशिष्ट का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने पर केंद्रित है।

सीखे गए सबक: जन जागरूकता अभियान तथा बुनियादी ढांचे का विकास बड़ी आबादी में स्वच्छता लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

7. डिजिटल इंडिया पहल (2015- आगे): इस कार्यक्रम का उद्देश्य डिजिटल साक्षरता, किफायती इंटरनेट तक पहुंच तथा ई-गवर्नेंस सेवाओं में सुधार करना है। इसने ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना, संचार, तथा सरकारी सेवाओं तक पहुंच में क्रांतिकारी बदलाव किया है।

सीखे गए सबक: डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश करना तथा डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना डिजिटल विभाजन को पाट सकता है तथा ग्रामीण समुदायों को सशक्त बना सकता है। 10

8. जन धन योजना (पीपुल्स मनी स्कीम) (2014- आगे): इस वित्तीय समावेशन योजना का उद्देश्य सभी भारतीय नागरिकों को बुनियादी बैंक खाते उपलब्ध कराना है। यह वित्तीय बचत को बढ़ावा देता है, सरकारी लाभों तक पहुँच को सुगम बनाता है और कैशलेस लेन-देन को प्रोत्साहित करता है।

सीखे गए सबक: वित्तीय समावेशन कार्यक्रम बैंकिंग सेवाओं तक कम पहुँच वाले लोगों की पहुँच में सुधार कर सकते हैं, बचत को सक्षम कर सकते हैं और वित्तीय सुरक्षा को बढ़ावा दे सकते हैं।

9. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (प्रधानमंत्री रसोई गैस योजना) (2016-आगे): यह पहल कम आय वाले ग्रामीण परिवारों को सब्सिडी वाले एलपीजी कनेक्शन प्रदान करती है। यह स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन को बढ़ावा देती है, घर के अंदर वायु प्रदूषण के कारण होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं को कम करती है, और पारंपरिक खाना पकाने के तरीकों पर निर्भरता को कम करके महिलाओं को सशक्त बनाती है।

सीखे गए सबक: सब्सिडी कार्यक्रम स्वच्छ और कुशल खाना पकाने के ईंधन को अपनाने, स्वास्थ्य परिणामों में सुधार और महिलाओं को सशक्त बनाने को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

कौशल भारत मिशन (2015-आगे): इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करके एक कुशल कार्यबल तैयार करना है। यह कौशल अंतर को पाटता है और युवा लोगों के लिए रोजगार क्षमता में सुधार करता है, जिससे उनकी कमाई की क्षमता बढ़ती है।

सीखे गए सबक: कौशल विकास कार्यक्रमों में निवेश करना बदलते नौकरी बाजार के लिए कार्यबल को तैयार करने और रोजगार दरों में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण है।

इन केस स्टडीज का अध्ययन करके, विकासशील देश इस बारे में मूल्यवान जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि भारत ने अपनी विकास चुनौतियों का कैसे समाधान किया है। जबकि प्रत्येक राष्ट्र का अपना अनूठा संदर्भ होता है, ये उदाहरण आर्थिक विकास, सामाजिक विकास और गरीबी में कमी को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी नीतियों और कार्यक्रमों को बनाने के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। भारत की "आवाज़" और भविष्य वैश्विक दक्षिण की "आवाज़" के रूप में भारत का उदय सहयोग, समावेशिता और साझा समृद्धि पर आधारित भविष्य के लिए एक सम्मोहक कहानी प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह यात्रा अपनी चुनौतियों के बिना नहीं है। आंतरिक विकास के मुद्दों को संबोधित करना, दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना और एक जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य को नेविगेट करना भारत के लिए अपनी नेतृत्व भूमिका को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण होगा। इस पहल की सफलता केवल भारत पर ही नहीं, बल्कि सभी विकासशील देशों की सामूहिक कार्रवाई पर निर्भर करती है। विभाजन को पाटने, सामान्य आधार खोजने और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने से, वैश्विक दक्षिण विश्व मंच पर एक अधिक एकीकृत मोर्चा बना सकता है। प्रौद्योगिकी, एक दोधारी तलवार, सभी देशों के लिए समान पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। वैश्विक दक्षिण के लिए एक मजबूत "आवाज़" के संभावित लाभ बहुत हैं। एक अधिक न्यायसंगत वैश्विक व्यापार प्रणाली, सभी के लिए सतत विकास, तथा विकासशील देशों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व के साथ एक सुधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था सभी पहुंच के भीतर हैं। भारत की यात्रा, जो अपने स्वयं के विकास संघर्षों और विजयों के केस स्टडीज में प्रलेखित है, अन्य देशों के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करती है। भारत के अनुभवों से सीखकर, विकासशील देश अपनी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी रणनीति तैयार कर सकते हैं। अंततः, वैश्विक दक्षिण की भारत की "आवाज़" केवल परिवर्तन के लिए आह्वान से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करती है; यह कार्रवाई का आह्वान है। यह विकासशील देशों के लिए एक साथ काम करने, अनुभव साझा करने और एक ऐसे भविष्य की वकालत करने का आह्वान है जहां उनकी आवाज़ सुनी जाए और उनकी चिंताओं को संबोधित किया जाए। जैसे-जैसे भारत इस मार्ग पर आगे बढ़ता है, इसकी सफलता केवल उसके अपने नेतृत्व पर ही नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण के सभी देशों की सामूहिक इच्छा पर निर्भर करेगी कि वे सभी के लिए अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत विश्व व्यवस्था का निर्माण करें। निष्कर्ष

सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति केंद्र (सीएसईपी) ने 'भारत की वैश्विक दक्षिण की खोज: चुनौतियां एवं अवसर' विषय पर अपनी विदेश नीति एवं सुरक्षा टिफिन टॉक श्रृंखला के 22वें संस्करण की मेजबानी की, जिसमें एशिया सोसायटी पॉलिसी इंस्टीट्यूट के गैर-निवासी प्रतिष्ठित फेलो सी. राजा मोहन ने भाग लिया। वक्ता ने 'वैश्विक दक्षिण' शब्द की विश्लेषणात्मक प्रासंगिकता पर सवाल उठाया और मौजूदा विश्व व्यवस्था की जटिलता का

अध्ययन करने के लिए संदर्भ के वैकल्पिक ढांचे की आवश्यकता का सुझाव दिया। चर्चा में वैश्विक दक्षिण के भीतर भारत की रणनीतिक भूमिका का पता लगाया गया। ग्लोबल साउथ' की रूपरेखा और क्षेत्रीय तथा वैश्विक गतिशीलता के लिए निहितार्थ प्रतिभागियों ने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि ग्लोबल साउथ पर शोध एजेंडा भारतीय परिप्रेक्ष्य से कैसे विकसित किया जा सकता है। चर्चाकर्ताओं में शिवशंकर मेनन, प्रतिष्ठित फेलो, सीएसईपी और मालंचा चक्रवर्ती, वरिष्ठ फेलो और उप निदेशक (शोध), ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन शामिल थे। चर्चा का संचालन सीएसईपी की एसोसिएट फेलो वेदा वैद्यनाथन ने किया। प्रतिभागियों में विभिन्न दूतावासों और मिशनों के अधिकारी, भारत और विदेशों के प्रमुख थिंक टैंक और विश्वविद्यालयों के विद्वान शामिल थे।

टिफिन टॉक सीरीज़ में विद्वान अपने हालिया, साक्ष्य-आधारित शोध को साथियों और चिकित्सकों के सामने प्रस्तुत करते हैं।[19] बंद कमरे में आयोजित होने वाले सेमिनारों की यह श्रृंखला भारत के विदेश और सुरक्षा मामलों पर शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं के बीच संवाद को सुविधाजनक बनाने का प्रयास करती है।

ग्लोबल साउथ का रहस्य उजागर करना: वक्ता ने 'ग्लोबल साउथ' शब्द की उत्पत्ति और विकास पर चर्चा करके बातचीत की शुरुआत की। इसे एक उत्तर-औपनिवेशिक आंदोलन के रूप में संदर्भित करते हुए, जिसने पश्चिमी नेतृत्व वाली व्यवस्था का विकल्प पेश किया और व्यक्तिगत राष्ट्रवाद के बढ़ने के साथ इसे छोड़ दिया गया। अकादमिक हाइबरनेशन की अवधि के बाद अब मुख्यधारा के अंतरराष्ट्रीय विमर्श में फिर से उभरने पर, यह तर्क दिया गया कि 'ग्लोबल साउथ' का विचार समकालीन दुनिया में तेजी से पुराना होता जा रहा है। इसे एक 'भावनात्मक रूप से समृद्ध' अवधारणा के रूप में वर्णित करते हुए, जो राजनीतिक और आर्थिक समानता की इच्छा को अपील करती है, वक्ता ने गैर-पश्चिमी दुनिया के भीतर एक सामंजस्यपूर्ण अतीत या एकता की झूठी भावना को आदर्श बनाने के खिलाफ चेतावनी दी। आर्थिक हितों, विकास पथों, संसाधन बंदोबस्ती और राजनीतिक परिदृश्यों में बहुत भिन्न 120 देशों को शामिल करते हुए, वक्ता ने रेखांकित किया कि यह शब्द बौद्धिक रूप से कैसे मायावी है। इसके अतिरिक्त, यह सलाह दी गई कि नवीनीकृत 'ग्लोबल साउथ' में रुचि को इसके अंतर्निहित राजनीतिक और रणनीतिक उद्देश्यों से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए। चर्चाकर्ताओं ने उत्तर-दक्षिण बाइनरी में निहित अतिसरलीकरण को स्वीकार किया, लेकिन इस शब्द की कुछ व्यावहारिक उपयोगिता को भी पहचाना। विशेष रूप से जलवायु कार्रवाई, व्यापार नीति और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में, जहाँ ग्लोबल साउथ प्रासंगिक और व्यापक सहमति में बना हुआ है। ग्लोबल साउथ की अधिक सूक्ष्म समझ के लिए तर्क भी दिए गए, जिसमें वैचारिक सरेखण के बजाय आर्थिक विचारों के आधार पर चयनात्मक जुड़ाव की वकालत की गई।

ग्लोबल साउथ के भीतर भारत की रणनीतिक स्थिति

सेमिनार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ग्लोबल साउथ के भीतर भारत की रणनीतिक स्थिति पर केंद्रित था। ग्लोबल साउथ की अग्रणी आवाज़ों में से एक के रूप में खुद को स्थापित करने की भारत की इच्छा ऐसे समय में आई है जब अन्य अभिनेता विकासशील दुनिया में प्रभाव के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। प्रतिभागियों ने भारत की स्थिति की जटिलता पर आगे चर्चा की, एक विकासशील अर्थव्यवस्था के साथ-साथ विकसित दुनिया के लिए एक रणनीतिक भागीदार के रूप में इसकी दोहरी भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने भारत की प्रमुख शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा के साथ आने वाली पहचान की पहेली पर ध्यान दिया, क्योंकि यह आधिपत्य-विरोधी आंदोलनों में अपनी ऐतिहासिक स्थिति के कारण है। विद्वानों ने कहा कि यह जांचना आवश्यक है कि वैश्विक व्यवस्था में भारत का उदय क्या दर्शाता है और गैर-पश्चिमी दुनिया में अपने पदचिह्न को बढ़ाने के अवसरों की खोज करना। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को पुष्ट करने में एक संतुलित और समावेशी रणनीति के महत्व पर प्रकाश डाला गया। एक सुझाव यह था कि भारत पश्चिमी शक्तियों और अन्य विकासशील राज्यों के बीच त्रिकोणीय सहयोग को बढ़ावा देकर अपनी अनूठी स्थिति का लाभ उठा सकता है। प्रतिभागियों ने सहमति व्यक्त की कि भारत को गैर-पश्चिमी दुनिया के साथ जुड़ते समय अपनी ताकत का इस्तेमाल करना चाहिए, न कि अन्य प्रमुख शक्तियों की रणनीतियों की नकल करनी चाहिए।

शोध के अवसर

सेमिनार का एक मुख्य उद्देश्य इस बात पर चर्चा शुरू करना था कि ग्लोबल साउथ का भारतीय परिप्रेक्ष्य से अध्ययन कैसे किया जा सकता है। प्रतिभागियों ने इस शोध एजेंडे को विकसित करने के तरीकों पर विचार-विमर्श किया, जिसमें आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी पर विशेष जोर दिया गया। उन्होंने ग्लोबल साउथ के साथ भारत के जुड़ाव के विभिन्न पहलुओं की जांच करने की आवश्यकता पर जोर दिया, जैसे कि इसकी सहायता नीतियों और ऋण की लाइनों की प्रभावशीलता। चर्चा करने वालों में से एक ने सहायता प्राप्त करने वाले देशों के दृष्टिकोणों का अध्ययन करने का प्रस्ताव दिया, जो कि फोकस का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इससे एक भारतीय रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी जो भारत की पहलों में सफल दृष्टिकोण और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को चित्रित करती है। विदेशों में भारतीय पूंजी और सेना की भूमिका, विस्तार की संभावनाओं और एक भारतीय विकास एजेंसी कैसी हो सकती है, इस बारे में भी सवाल उठाए गए। इसके अतिरिक्त, विदेशों में विकास परियोजनाओं में निजी क्षेत्र की भागीदारी की जांच करने और दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने के लिए उनका लाभ कैसे उठाया जा सकता है, इस पर सुझाव दिए गए। सत्र का समापन प्रतिभागियों द्वारा वैश्विक दक्षिण पर चल रहे काम और शोध के लिए नए रास्ते तलाशने की क्षमता पर ध्यान देने के साथ हुआ।[20]

REFERENCES

1. "UNCTADstat - वर्गीकरण"। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में मोटे तौर पर अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन, इज़राइल के बिना एशिया, जापान और कोरिया गणराज्य और ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बिना ओशिनिया शामिल हैं। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में मोटे तौर पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप, इज़राइल, जापान, कोरिया गणराज्य, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल हैं।

2. "वर्गीकरण - UNCTAD सांख्यिकी पुस्तिका 2023"। unctad.org।

3. "सांख्यिकी पुस्तिका 2022" (पीडीएफ)। unctad.org। पृ। 21. मूल से 12 दिसंबर 2022 को संग्रहीत (पीडीएफ)। नोट: उत्तर विकसित अर्थव्यवस्थाओं को संदर्भित करता है, दक्षिण विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को; व्यापार को निर्यात पक्ष से मापा जाता है; जहाज के स्टोर और बंकरों के साथ-साथ अनिर्दिष्ट गंतव्य के साथ छोटे और विशेष श्रेणी के निर्यात को शामिल नहीं किया जाता है।

4. "परिचय: वैश्विक दक्षिण की अवधारणाएँ"। gssc.uni-koeln.de। मूल से 4 सितंबर 2016 को संग्रहीत। 18 अक्टूबर 2016 को पुनःप्राप्त।, "वैश्विक दक्षिण की अवधारणाएँ" (पीडीएफ)। gssc.uni-koeln.de। 10 मार्च 2024 को पुनःप्राप्त।

5. नोरा, मारेई; मिशेल, सैवी (जनवरी 2021)। "वैश्विक दक्षिण देश: शहर के रसद का अंधेरा पक्ष। द्वैधीकरण बनाम द्विध्रुवीकरण"। परिवहन नीति। 100: 150–160। doi:10.1016/j.tranpol.2020.11.001. S2CID 228984747. इस लेख का उद्देश्य विकासशील देशों (या वैश्विक दक्षिण देशों) (जहाँ 'आधुनिक' और 'पारंपरिक' मॉडल अक्सर सह-अस्तित्व में रहते हैं) और विकसित देशों (या वैश्विक उत्तर देशों) के बीच शहर रसद (धारणा जिसे हम परिभाषित करते हैं) की तुलना करके दुनिया भर में रसद विकास की असमानता का मूल्यांकन करना है।

6. मिटलिन, डायना; सैटरथवेट, डेविड (2013)। वैश्विक दक्षिण में शहरी गरीबी: पैमाना और प्रकृति। रूटलेज। पृष्ठ 13. आईएसबीएन 9780415624664 - Google पुस्तकें के माध्यम से।

7. मिमिको, नहज़ीम ओलुवाफेमी (2012)। वैश्वीकरण: वैश्विक आर्थिक संबंधों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की राजनीति। कैरोलिना अकादमिक प्रेस। पृष्ठ 13. 47. आईएसबीएन 978-1-61163-129-6.

8. थेरियन, जीन-फिलिप (अगस्त 1999)। "उत्तर-दक्षिण विभाजन से परे: विश्व गरीबी की दो कहानियाँ"। थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली। 20 (4): 723–742। doi:10.1080/01436599913523.

9. हिकेल, जेसन (8 अप्रैल 2016)। "वैश्विक असमानता हमारी सोच से कहीं ज़्यादा खराब हो सकती है"। द गार्जियन। 6 नवंबर 2023 को पुनःप्राप्त।

10. हिकेल, जेसन; डोर्निंगर, क्रिश्चियन; वीलैंड, हैंसपीटर; सुवांडी, इंटन (मार्च 2022)। "विश्व अर्थव्यवस्था में साम्राज्यवादी विनियोग: असमान विनिमय के माध्यम से वैश्विक दक्षिण से पलायन, 1990-2015"। वैश्विक पर्यावरण परिवर्तन। 73: 102467. बिबकोड:2022GEC....7302467H. doi:10.1016/j.gloenvcha.2022.102467.

11. हिकेल, जेसन; सुलिवन, डायलन; ज़ूमकावाला, हुज़ैफ़ा (2 नवंबर 2021)। "उत्तर-औपनिवेशिक युग में लूट: वैश्विक दक्षिण से निकासी की मात्रा निर्धारित करना असमान विनिमय के माध्यम से, 1960-2018"। नई राजनीतिक अर्थव्यवस्था। 26 (6): 1030- 1047. doi:10.1080/13563467.2021.1899153. S2CID 233600773.

12. "दक्षिण-दक्षिण सहयोग" (पीडीएफ)। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम। मूल (पीडीएफ) से 19 सितंबर 2015 को संग्रहीत।

13. "दक्षिण-दक्षिण सहयोग के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय"। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम। मूल से 3 दिसंबर 2012 को संग्रहीत।

14. आचार्य, अमिताव (3 जुलाई 2016)। "वैश्विक आईआर परिप्रेक्ष्य से बांडुंग सम्मेलन का अध्ययन"। ऑस्ट्रेलियाई जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स। 70 (4): 342–357। doi:10.1080/10357718.2016.1168359। S2CID15658952 0।

15. ग्रे, केविन; गिल्स, बैरी के। (2 अप्रैल 2016)। "दक्षिण-दक्षिण सहयोग और वैश्विक दक्षिण का उदय"। थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली। 37 (4): 557–574। doi:10.1080/01436597. 2015.1128817.

16. कोलियर, फ्रैन एम. (मार्च 2021)। "ऑस्ट्रेलिया और वैश्विक दक्षिण: ज्ञान और स्थान और पहचान की अस्पष्टताएँ"। जर्नल ऑफ़ हिस्टोरिकल सोशियोलॉजी। 34 (1): 41–54. doi:10.1111/johs.12312. S2CID 233625470.

17. मूसावी, लियोन (15 फरवरी 2019)। "एशियाई अपराध विज्ञान और दक्षिणी अपराध विज्ञान की एक दोस्ताना आलोचना"।